# ~ सत्य बहुमत ~

*'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'*

## एक परिचय


## भाई सत्य देव चौधरी

Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

# ~ सत्य बहुमत ~

*'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'*

## *एक परिचय*

*भाई सत्य देव चौधरी*

Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

# ~ सत्य बहुमत ~

'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'

**~ सत्य बहुमत ~** को एक परिचय के रूप में इन पन्नों में दिया गया है। सत्य बहुमत के समर्थन में विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शन करने पर बांटे गए हैंडबिलों और पोस्टरों का संकलन भी इस पुस्तिका में है। सत्य बहुमत के माध्यम से किए गए प्रदर्शनों के समय जागरूक मतदाताओं द्वारा भ्रष्टाचार से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर भी इस पुस्तिका में है। सत्य बहुमत–एक परिचय के साथ साथ **~ सत्य बहुमत ~ "भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प** "की छोटी सी पुस्तक को भी पढ़ लेना, मैं आश्वासन दे सकता हूं कि भ्रष्ट राजनीति के बारे में कुछ ऐसे तथ्य जानने को मिलेंगे जो आपने पिछले 65 वर्षों की राजनीति में कहीं से और किसी से भी नहीं जाने होंगे। राजनीति भ्रष्ट क्यों है और राजनीति भ्रष्टाचार मुक्त कैसे बन सकती है, इसकी जानकारी हो जाने के पश्चात आप बेबस, लाचार और असहाय बनकर नहीं बैठोगे, आप ऐसे विचार करने लगोगे कि सत्य बहुमत को समर्थन देकर तुरन्त भ्रष्ट राजनीति से मुक्त हो जाएं। सत्य बहुमत की राजनीति के विचार को ऐसे ही मत गंवा देना, थोड़ा सा सकारात्मक प्रयास करके आप देश की राजनीति को भ्रष्टाचार मुक्त कर सकते हो, ये शक्ति आपके अन्दर ही है। धन्यवादः

आपका

भाई सत्यदेव चौधरी

---

टाईपिंग सहयोग – श्री सन्तोषी पाण्डेय

# ~ सत्य बहुमत ~

*'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'*

देश के अधिकतर मतदाता ये कहते हुए सुने जा सकते हैं कि : सरकार का हर विभाग भ्रष्टाचार में लथपथ है, कोई भी और कहीं पर भी सुरक्षित नहीं है, शिक्षा के स्तर में भारी गिरावट है, चारों ओर गंदगी ही गंदगी है, सभी खाद्य पदार्थों में मिलावट है, महंगाई आसमान की ऊंचाई को भी पार कर गई, बेराजगारी है, बीमारी है, बिजली नहीं है, बिजली के साथ साथ पानी भी नहीं है, विश्वास है नहीं, सच्चाई नहीं है, प्यार प्रेम और सहयोग की भी भारी कमी, समय की कोई कदर नहीं, सभी एक दूसरे की आलोचना और विरोध करने में व्यस्त हैं, बार बार वोट देने पर और सत्ता दल में परिवर्तन हो जाने पर भी स्थिति में सुधार आने के बजाय और बिगड़ती चली गई, समस्या को नियंत्रित करने के लिए केवल कानून बनाने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं दिखाई पड़ता, टैक्स ही टैक्स, टैक्सों के उपर भी टैक्सों की भरमार, हर जगह बैरियर, टोल और अवरोधक लगे हुए हैं, हर छोटे बड़े व्यापारी और उद्योग करने वाले को किसी भी प्रकार के माल आने और जाने पर अनेकों प्रकार के अनावश्यक फार्मों की भरमार है, किसानों की मजदूरों की हालत भी दयनीय है, कहीं पर और किसी समय भी, किसी की भी हत्या हो सकती है, चोरी हो सकती है, डाका पड़ सकता है, बलात्कार हो सकता है, अपहरण हो सकता है। हस्पतालों और डाक्टरों की भारी संख्या बढ़ जाने पर भी रोगी कम नहीं हुए, थानों और जेलों की बढ़ोतरी होने पर भी अपराध कम नहीं हुए, कितने ही न्यायालयों का निर्माण होने पर भी मुकदमे कम नहीं हुए, ऐसा लगता है विकास केवल हस्पतालों, थानों और न्यायालयों की संख्या बढ़ाने में ही सिमट कर रह गया, लिखते ही जाओ नकारात्मक बातें समाप्त होने के समीप भी नहीं आती, जिससे भी बात करके देख लो अपनी ओर से और चार नकारी

बातें जोड़ देगा। केवल नकारात्मक चर्चाओं के चक्कर में पड़कर समय को बर्बाद करना मेरा लक्ष्य नहीं है, और न ही असफलताओं का दोष व्यक्तिगत रूप से किसी व्यक्ति, राजनेता या राजनीतिक दल के उपर मढ़ना चाहता हूं, परन्तु समस्या का कहीं न कहीं, कोई न कोई कारण तो है, समस्या अपने आप तो नहीं बनी।

मेरे विचार में किसी भी असफलता, समस्या या अपराध का कारण भ्रष्ट राजनीति है, यदि राजनीति भ्रष्ट नहीं होगी तो किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान निकालने में देशवासी सक्षम हैं। विश्व के किसी भी देश के नागरिकों की तुलना में भारत के नागरिक अधिक समझदार, बुद्धिमान, विवेकशील, सहनशील व मेहनती हैं, परन्तु भ्रष्ट राजनीति के मकड़जाल में ऐसे फंस गए कि सारी परिस्थितियां अनुकूल होने पर भी सब कुछ उल्टा हो गया। सब कुछ होते हुए भी ऐसा लगता है देश के दो तिहाई से भी अधिक गरीबों के पास कुछ भी नहीं है, जो कुछ है वो मात्र कुछ राजनेताओं और इन राजनेताओं की सांठगांठ से कुछ धनाढ्य उद्योगपतियों के पास ही सिमट कर रह गया। सभी दोषों का कारण केवल भ्रष्ट राजनीति है, जब तक राजनीति भ्रष्टाचार मुक्त नहीं होगी समस्या का समाधान असंभव है।

भ्रष्ट राजनीति को अधिकतम देशवासियों ने अनजाने में, और भ्रष्ट राजनेताओं ने जान बूझकर स्वीकार किया हुआ है। जिस राजनीति से केवल भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार निकला, विकास हुआ ही नहीं, फिर भी इसी भ्रष्ट राजनीति को पकड़े रहने की हमारी क्या मजबूरी है? वर्तमान भ्रष्ट बहुमत की भ्रष्ट राजनीति और भविष्य की भ्रष्टाचार मुक्त ~सत्य बहुमत~ की राजनीति के विकल्प को आओ समझना आरम्भ करते हैंः–

# ~सत्य बहुमत~

*'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'*

## *भाई सत्य देव चौधरी*

Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

***~सत्य बहुमत~*** को समझने के लिए सत्य बहुमत की वेबसाइट लॉग ऑन करें व "सत्य बहुमत" पढें या छपी हुई प्रति निशुल्क प्राप्त करने के लिए अपना नाम, पता, व मोबाइल नम्बर हमें ई–मेल करके मंगवा सकते हैं।

# ~सत्य बहुमत~

*'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'*



Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

# ~ सत्य बहुमत ~

*'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'*

Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

***~सत्य बहुमत~*** भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प का विचार है। आजादी के बाद हमारे नेताओं ने प्रजातंत्र व निष्पक्ष चुनावों को आधार मानते हुए बहुमत की सरकार से शासन करना तय किया। स्वाभिमान व गर्व से जीने का मार्ग सच्चे प्रजातंत्र और बहुमत से ही निकलता है इसलिए सच्चे प्रजातंत्र और बहुमत की व्यवस्था का तनिक भी विरोध नहीं है, अपितु 100 प्रतिशत से भी अधिक इस व्यवस्था का समर्थन करते हैं, परन्तु सरकार बनाने के लिए सदस्यों के भ्रष्ट बहुमत और इसके विकल्प में वोटों के सत्य बहुमत की राजनीति को ठीक से समझना होगा।

हमारे देश में सरकार बनने से पहले देशवासियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनावों द्वारा वोटों के बहुमत से प्रतिनिधि चुने जाते हैं। पूरे देश में सभी 543 क्षेत्रों में प्रतिनिधियों का चुनाव वोटों के बहुमत से ही होता है। –सत्य बहुमत– के विचार में वोटों के बहुमत से होने वाले निर्णय 100 प्रतिशत सत्य होते हैं इसलिए वोटों के बहुमत से जरा भी आपत्ति नहीं है। परन्तु सभी प्रतिनिधियों का चुनाव वोटों के बहुमत से हो जाने के पश्चात जब सरकार बनाने का समय आता है तब वोटों के बहुमत की धज्जियां उड़ाकर सदस्यों के बहुमत को स्वीकार किया जाता है। सदस्यों के बहुमत से ही सरकार बनाना क्यों आवश्यक है, सरकार भी वोटों के बहुमत से क्यों नहीं बनती?

सत्य बहुमत का विचार है कि सदस्यों के बहुमत से सरकार बनाना ही भ्रष्टाचार को जन्म देने का एकमात्र कारण है। भ्रष्टाचार का जन्म और आरम्भ होता ही सदस्यों के बहुमत से है। सत्य बहुमत के विचार में सरकार भी सदस्यों की तरह वोटों के बहुमत से ही बननी चाहिए। वोटों के बहुमत से सरकार बनेगी तो भ्रष्टाचार होना और भ्रष्टाचार करना असंभव है। 'सत्य बहुमत' के विचार में वोटों का बहुमत सत्य बहुमत है और सदस्यों का बहुमत भ्रष्ट से भी भ्रष्ट बहुमत है।

किसी भी राजनीतिक दल, राजनेता या आन्दोलनकारी ने आज तक सत्य बहुमत के विचार की चर्चा नहीं करी या जानबूझ कर चर्चा नहीं करते। सदस्यों के बहुमत से सरकार बनाने की बजाय सरकार वोटों के बहुमत से क्यों नहीं बनती, इसी को समझने और समझाने का सकारात्मक प्रयास सत्य बहुमत है। सत्य बहुमत की व्यवस्था से भ्रष्टाचार मुक्त सरकार बनाने के लिए अभी तक के सभी प्रयास पूर्ण रूप से सफल रहे हैं। हमारी सरकार वोटों के बहुमत से बने, इस व्यवस्था को स्थापित केवल चुनावों में बहुमत से जीतकर ही किया जा सकता है।

सत्य बहुमत का विचार समझ लेने के पश्चात यदि आप सत्य बहुमत से सहमत हैं तो सत्य बहुमत को स्थापित करवाने के लिए अपना सकारात्मक सहयोग, सुझाव व समर्थन देने में देर न करके केवल देश भक्त नहीं सच्चे देश भक्त बनें।

देश की भ्रष्ट राजनीति पर आप सत्य बहुमत का असर देखना चाहते हैं तो दो प्रयोग करें :

**पहला प्रयोग :** आज ही वर्तमान सरकार से ये घोषणा करवादो कि आने वाले चुनावों में सरकार उस राजनीतिक दल के नेता के नेतृत्व में बनेगी जिसके पास पूरे देश में अन्य राजनीतिक दलों की तुलना में वोट अधिक होंगे–न कि समझौते और गठबंधनों द्वारा अधिक सदस्य। देख लेना घोषणा के मात्र 15 मिनट के अन्दर अन्दर भ्रष्टाचार का बुखार उतरना आरम्भ हो जाएगा।

**दूसरा प्रयोगः** सत्य बहुमत के समर्थन में संगठित होकर दिनांकः शनिवार, 27 अक्टूबर, 2012 को जन्तर मन्तर पर भारी संख्या में एकत्रित होकर इस भ्रष्ट राजनीति को दिखादो कि हमें भ्रष्ट बहुमत की सरकार नहीं चाहिए हमें सत्य बहुमत की सरकार ही चाहिए। भारी जनमत तैयार करके अपनी आंखों से देख लेना कैसे भ्रष्ट राजनीति में हड़कम्प मचेगा।

पहला प्रयोग तो हम कर नहीं सकते परन्तु दूसरा प्रयोग करने से हमें कोई रोक नहीं सकता। आप सभी से मेरी अपील है कि सत्य बहुमत की क्रांति द्वारा भ्रष्ट राजनीति को सदा सदा के लिए मौत के मुंह में डाल दो। सत्य बहुमत को समझने और समझाने के लिए

आओ मिलते हैं जन्तर मन्तर पर दिनांकः शनिवार, 27 अक्टूबर, 2012 को प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक। धन्यवादः

आपका

भाई सत्यदेव चौधरी

1. व्यक्तिगत रूप से किसी भी राजनीतिक दल, राजनेता या व्यक्ति की आलोचना या विरोध करना सत्य बहुमत का उद्देश्य नहीं है। सत्य बहुमत का लक्ष्य है भारत की राजनीति को भ्रष्टाचार मुक्त राजनीति का विकल्प देना। शान्तिपूर्वक जनमत तैयार करके सत्य बहुमत को स्थापित करवाना सत्य बहुमत का लक्ष्य है।
2. कृपया इस कागज को सड़क पर न फेकें और फिर से कागज बनाने के काम में लें।
3. आप से अनुरोध है कि निजि वाहनों का प्रयोग कम से कम करके आने के लिए सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग करें।
4. कृपया शांति, अनुशासन व स्वच्छता रखने में सहयोग दें।
5. आप सभी से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में सत्य बहुमत की फेसबुक से जुड़कर सत्य बहुमत को Like करें, शेयर करें और कमेंट करें।

http://www.facebook.com/satyabahumat

*भ्रष्टाचार के विरोध में जन्तर मन्तर पर दिनांक 27 अक्टुबर, 2012 को प्रदर्शन करने पर बांटे गए हैंडबिल का नमूना।*

# हर हरिजन

# ~सत्य बहुमत~



Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

# ~ सत्य बहुमत ~

***'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'***

Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

देश की राजधानी दिल्ली में देश की राजनीति का सर्वोच्च स्थान होने के साथ साथ भ्रष्टाचार और अपराध भी चरम सीमा पर है। दिन प्रतिदिन ऐसे ऐसे भ्रष्टाचार और अपराधों की घटनाएं देखने और सुनने को मिलती हैं कि हर घटना घृणित से घृणित अपराध और भ्रष्टाचार का उदाहरण बन जाती है। आप सभी की तरह मैं भी इन अपराधों और भ्रष्टाचारी घटनाओं की कठोर से कठोर निंदा करता हूं। परन्तु केवल निंदा करके मैं अपने आपको असहाय, बेबसी और लाचारी की स्थिति में नहीं आने देना चाहता। मैं एक ऐसे राजनीतिक विकल्प का विचार रखता हूं जिसमें न भ्रष्टाचार हो सकता है न ही अपराध। अपराध और भ्रष्टाचार के जन्म का कारण किसी व्यक्ति विशेष को न ठहराते हुए मेरे विचार में अपराध और भ्रष्टाचार का कारण केवल हमारी अपनी स्वीकार करी हुई सरकार बनाने के लिए भ्रष्ट बहुमत की व्यवस्था है। सरकार बनाने की भ्रष्ट बहुमत की व्यवस्था को मैंने ~सत्य बहुमत~ (www.satyabahumat.com) में लिखा है और सत्य बहुमत की व्यवस्था को समझने और समझाने का प्रयास किया है। सत्य बहुमत की राजनीति में भ्रष्टाचार की आवश्यकता ही नहीं है, और इसके विपरीत भ्रष्ट बहुमत की राजनीति में अपराधों को समाप्त करने की बात तो भूल ही जाओ अपराधों पर अंकुश भी नहीं लग सकता, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हम सब ने पिछले 65 वर्षों में सभी राजनीतिक दलों की सदस्यों के बहुमत से बनी सरकारों से देख लिया है।

हर राजनेता हर आन्दोलनकारी व्यवस्था परिर्वतन के नाम पर उसी भ्रष्ट व्यवस्था को चुनावों में अपना समर्थन देकर स्वयं भ्रष्ट व्यवस्था का भाग बनना चाहते हैं। व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर कुछ राजनेताओं को भ्रष्ट बताते हुए उन्हें हटाकर स्वयं सत्ता में आसीन होने की लालसा रखते हैं। हमारी अपनी स्वीकार करी हुई सरकार बनाने की व्यवस्था क्या है, स्वीकारी हुई व्यवस्था में क्या दोष है और इस स्वीकारी हुई दोषपूर्ण व्यवस्था का विकल्प क्या है इस पर कोई भी राजनेता और आन्दोलनकारी गम्भीरता से चर्चा नहीं करते। मेरा ये मानना है कि सत्ता में आकर भ्रष्ट राजनीति का विकल्प देना कोई अनुचित कार्य नहीं है, ये प्रश्न बहुत ही स्वाभाविक है कि क्या राजनीति में आए बिना भ्रष्ट राजनीति को विकल्प दिया जा सकता है–नहीं दिया जा सकता।

हमारे युवाओं ने भ्रष्टाचार और अपराध के विरोध में भ्रष्ट राजनीति से टक्कर लेकर साहस का परिचय दिया है, परन्तु हमारे युवा ये नहीं समझ पा रहे हैं कि भ्रष्टाचार और अपराधों के कारण की जड़ कहां है। मेरे विचार में अपराध और भ्रष्टाचार का जन्म और आरम्भ केवल भ्रष्ट बहुमत की राजनीति से ही होता है। भ्रष्ट बहुमत की राजनीति में टिके रहने के लिए भ्रष्टाचारियों और अपराधियों के समर्थन का लेन देन करना राजनेता के लिए मजबूरी बन जाती है। यदि भ्रष्ट बहुमत की राजनीति नहीं होगी तो अपराध और भ्रष्टाचार भी नहीं होगा, और यदि कहीं थोड़ा बहुत होगा भी तो बहुत शीघ्र ही अपराध और भ्रष्टाचार के उपर काबू पाया जा सकता है, अपराध और भ्रष्टाचार का विरोध करने पर भ्रष्ट राजनेताओं द्वारा नियंत्रित पुलिस के डंडे खाने की आवश्यकता नहीं होगी।

भ्रष्ट बहुमत के आधार पर टिकी भ्रष्ट राजनीति और भ्रष्टाचार मुक्त सत्य बहुमत की राजनीति क्या है, समझ लेते हैं। हमारे देश में सरकार बनाने से पहले देशवासियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनावों द्वारा वोटों के बहुमत से प्रतिनिधि चुने जाते हैं। पूरे देश में सभी 543 क्षेत्रों में प्रतिनिधियों का चुनाव वोटों के बहुमत से ही होता है। मेरी समझ में वोटों के बहुमत से होने वाले निर्णय 100 प्रतिशत सत्य होते हैं, और इसी आधार पर मैं सदस्यों के चुनाव तक की चुनावी व्यवस्था को सत्य बहुमत मानता हूं। परन्तु सभी प्रतिनिधियों का चुनाव वोटों के बहुमत से हो जाने के पश्चात जब सरकार बनाने का समय आता है तब वोटों के बहुमत की धज्जियां उड़ाकर सदस्यों के बहुमत को स्वीकार किया जाता है। सरकार बनाने के लिए सदस्यों का बहुमत क्यों होना चाहिए, सरकार वोटों के बहुमत से क्यों नहीं बनती?

क्या सदस्यों का बहुमत जुटाने के लिए अन्य राजनीतिक दलों का समर्थन बिना भ्रष्टाचार के संभव है—नहीं है। जब अन्य राजनीतिक दलों का समर्थन लेने के लिए गठबंधन और समझौतों की राजनीति बिना भ्रष्टाचार और अपराधों के संभव है ही नहीं फिर भी विश्व के महानतम प्रजातंत्र को इसी भ्रष्ट बहुमत की राजनीति को पकड़े रहने की क्या मजबूरी है—या तो देश के भ्रष्ट राजनेता जानते हैं या उपर वाला। मेरे युवा साथियो समय को बर्बाद न करते हुए आप अच्छे से समझ लें कि भ्रष्ट बहुमत और सत्य बहुमत को समझने और समझाने के लिए न तो कोई विदेशी कम्पनी आपके पास आएगी और न ही कोई विदेशी नेता, इस व्यवस्था को तो स्वयं हम सब को मिलकर समझना होगा। सत्य बहुमत की व्यवस्था को स्थापित करवाके ही अपराध व भ्रष्टाचार मुक्त राजनीति का आरम्भ किया जा सकता है। मेरे ये स्पष्ट विचार हैं कि सरकार उस नेता के नेतृत्व में बननी चाहिए जिसको पूरे देश में और सब नेताओं की तुलना में वोट अधिक मिले हों न कि सदस्य। सत्य बहुमत को बहुत ही सरलता से निम्न दो प्रकारों से समझा जा सकता है।

**पहला** : मान लो पूरे देश में सभी 543 सदस्यों के चुनावों में दो राजनीतिक दल चुनाव के मैदान में हैं, पहले दल के 300 सदस्य 45 लाख वोट प्राप्त करके विजयी होते हैं और दूसरे दल के 243 सदस्य 55 लाख वोट प्राप्त करके विजयी होते हैं, आप ही बताइए सरकार बनाने के लिए बहुमत किसका होना चाहिए, कम वोटों से अधिक सदस्यों का या अधिक वोटों से कम सदस्यों का।

**दूसरा** : एक राजनीतिक दल का पूरे देश में चुनाव लड़ने पर एक भी सदस्य विजयी नहीं हुआ परन्तु अन्य सभी राजनीतिक दलों की तुलना में वोट सबसे अधिक मिले, इस स्थिति में बहुमत से सरकार बनाने का अधिकार किसका होना चाहिए। सभी सीटों पर हारने के पश्चात भी पूरे देश में अन्य सभी राजनीतिक दलों की तुलना में वोट सबसे अधिक मिलने पर क्या ये नहीं मानना चाहिए कि सभी सीटों पर हारने वाले नेता के कार्यक्रम से देश की जनता बहुमत से सहमत है।

भ्रष्ट बहुमत की भ्रष्ट राजनीति का भेद जान लेने के पश्चात मेरे युवा साथियो अपराध और भ्रष्टाचार का विरोध आन्दोलनों के माध्यम से करते हुए अपनी कुल शक्ति और समय का कुछ भाग वर्तमान भ्रष्ट बहुमत को नकारने के प्रयास में और कुछ समय सत्य बहुमत को स्थापित करवाने में लगा दो। सत्य बहुमत को स्थापित करवाने के लिए जनमत तैयार करके आप स्वयं अपनी आंखो से देखना कैसे इस भ्रष्ट राजनीति में जमे हुए अपराधियों और भ्रष्टाचारियों के पैर उखड़ते हैं। भ्रष्ट राजनीति में हड़कम्प मचाने का केवल सत्य बहुमत ही एकमात्र मार्ग है। आओ हम सब मिलकर अहिंसक मार्ग द्वारा सत्य बहुमत को स्थापित करवाने के लिए संगठित होकर सकारात्मक समर्थन, सुझाव व सहयोग से केवल देशभक्त नहीं सच्चे देशभक्त बनें। धन्यवादः

आपका

भाई सत्यदेव चौधरी

आप सभी से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में सत्य बहुमत की फेसबुक से जुड़कर सत्य बहुमत को Like करें, शेयर करें और कमेंट करें।

http://www.facebook.com/satyabahumat

*अपराध और भ्रष्टाचार के विरोध में जन्तर मन्तर पर दिनांक 13 जनवरी, 2013 को प्रदर्शन करने पर बांटे गए हैंडबिल का नमूना।*

# मैं

# ~सत्य बहुमत~

# को ही

# वोट

# दूंगा

Web: www.satyabahumat.com
E-mail: satyabahumat@gmail.com
Http://www.facebook.com/satyabahumat

# मैं

# ~सत्य बहुमत~

# को ही

# वोट

# दूंगी

Web: www.satyabahumat.com
E-mail: satyabahumat@gmail.com
Http://www.facebook.com/satyabahumat

# ~सत्य बहुमत ~ के सौजन्य से

Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

| भ्रष्ट बहुमत की व्यवस्था | परिणाम |
|---|---|
| भ्रष्टाचार और अपराध ऊपर से नीचे आता है | न कि नीचे से ऊपर इसलिए सबसे उपर की राजनीति भ्रष्टाचार मुक्त होनी चाहिए, जो है नहीं। |
| मतदाता<br>प्रजातंत्र – चुनाव – बहुमत | स्वाभिमान व गर्व से जीने का मार्ग सच्चे प्रजातंत्र और बहुमत से ही निकलता है, इसलिए सच्चे प्रजातंत्र व निष्पक्ष चुनावों की व्यवस्था का 100 प्रतिशत से भी अधिक समर्थन करते हैं। परन्तु सरकार बनाने के लिए सदस्यों के भ्रष्ट बहुमत और वोटों के ~सत्य बहुमत~ को समझना होगा। |
| सरकार बनने से पहले राजनीतिक पार्टियों द्वारा चुनाव में लड़कर पूरे देश में कुल 543 सदस्यों के चुनाव वोटों के बहुमत से होते हैं। | वोटों के बहुमत से होने वाले निर्णय 100 प्रतिशत सत्य होते हैं, इसलिए वोटों के बहुमत से होने वाले चुनावों की व्यवस्था को हम ~सत्य बहुमत~ कहते हैं। |
| अब सरकार बनाने के लिए कम से कम 272 सदस्यों का बहुमत होना चाहिए। | यहीं से भ्रष्ट बहुमत का जन्म होता है। एक राजनीतिक दल के जीते हुए सदस्य 272 से कम हैं तो पूरे करने के लिए और यदि जीते हुए सदस्य 272 से अधिक हैं तो भी उनको टिकाए रखने के लिए भ्रष्टाचार से समझौते करना आवश्यक है। बिना भ्रष्टाचार के राजनीतिक समझौते होना असंभव है। |
| सरकार बनाने के लिए नेता कौन होगा ये चुनावों से पहले तय नहीं किया जाता–पहले चुनाव करवाओ फिर नेता को ढूंढा जाता है। | बिना नेता के मतदाता कितनी भ्रमित स्थिति में मत देने का निर्णय करता है, ऐसे लगता है जैसे मतदाता बिना ईंजन की रेल में बैठा हो। |
| सरकार बनाने के लिए नेता का चुनावों द्वारा लोक सभा का सदस्य होना आवश्यक नहीं है। | प्रजातंत्र का गला घोंट कर देश की गरीब जनता पर नेता थोप दिया जाता है। इस स्थिति में सरकार बनाने और सरकार को बनाए रखने के लिए अपराध और भ्रष्टाचार के समर्थन का लेन देन करना राजनेता की मजबूरी बन जाती है। |
| सरकार बनाने के लिए मतदाता केवल चुनाव की औपचारिकता निभाता है, मतदाता चुनाव से पहले भी और चुनाव हो जाने के पश्चात भी शक्तिहीन होता है व किसी प्रकार के राजनीतिक निर्णय लेने में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। | गरीब मतदाता से मत लेकर उसकी गरीबी का मजाक उड़ाया जाता है। मतदाता मत देकर या मत न देकर केवल अपने आप को असहाय लाचार और बेबस मानकर ठगा सा अनुभव करता है। |
| सभी सरकारी निर्णय और बिलों को पास फेल भ्रष्ट बहुमत के आधार पर टिकी राजनीति और व्हिप से करवाए जाते हैं। | इस व्यवस्था में अपराध और भ्रष्टाचार नहीं होगा तो और क्या होगा? |

# ~सत्य बहुमत~ के सौजन्य से

Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

| ~सत्य बहुमत~ की व्यवस्था | परिणाम |
|---|---|
| मतदाता<br>प्रजातंत्र – चुनाव – बहुमत | स्वाभिमान व गर्व से जीने का मार्ग सच्चे प्रजातंत्र और बहुमत से ही निकलता है, इसलिए सच्चे प्रजातंत्र व निष्पक्ष चुनावों की व्यवस्था का 100 प्रतिशत से भी अधिक समर्थन करते हैं। परन्तु सरकार बनाने के लिए सदस्यों के भ्रष्ट बहुमत और वोटों के ~सत्य बहुमत~ को समझना होगा। |
| सरकार बनने से पहले राजनीतिक पार्टियों द्वारा चुनाव में लड़कर पूरे देश में कुल 543 सदस्यों के चुनाव वोटों के बहुमत से होंगे। | वोटों के बहुमत से होने वाले निर्णय 100 प्रतिशत सत्य होते हैं, इसलिए वोटों के बहुमत से होने वाले चुनावों की व्यवस्था को हम ~सत्य बहुमत~ कहते हैं। |
| सरकार बनाने के लिए 543 सदस्यों का चुनाव वोटों के बहुमत से होते समय पूरे देश में जिस भी राजनीतिक दल के अन्य दलों की तुलना में वोट अधिक होंगे उसी राजनीतिक दल का नेता स्वतंत्र रूप से सरकार बनाने का अधिकारी होगा। सरकार बनाने के लिए दूसरे किसी भी राजनीतिक दल से किसी प्रकार के समझौते– गठबंधन नहीं होंगे। | पूरे देश में मतदाताओं के बहुमत से यदि देश का नेता चुना जाएगा उस नेता का चुनाव भ्रष्टाचार के दम पर नहीं हो सकता बल्कि नेता का चुनाव उसकी योग्यता और विश्वस्नीयता के आधार पर होगा। सबसे श्रेष्ठ और ~सत्य बहुमत~ यही है। हमें तो सरकार बनाने के लिए बहुमत चाहिए न कि सदस्यों का भ्रष्ट बहुमत। |
| सरकार बनाने के लिए कम से कम 272 सदस्यों के बहुमत का होना आवश्यक नहीं होगा। आवश्यक होगा कि किस राजनीतिक दल के नेता को अन्य राजनीतिक दलों की तुलना में मतदाताओं ने अधिक वोट दिए, अधिक वोट प्राप्त करने वाले राजनीतिक दल का नेता स्वतंत्र रूप से सरकार बनाकर देश की राजनीति का उत्तरदायित्व लेगा। | ***~सत्य बहुमत~ को समझ लें:-***<br>मान लो पूरे देश में सभी 543 सदस्यों के चुनावों में दो राजनीतिक दल चुनाव के मैदान में हैं, पहले दल के 300 सदस्य 45 लाख वोट प्राप्त करके विजयी होते हैं और दूसरे दल के 243 सदस्य 55 लाख वोट प्राप्त करके विजयी होते हैं, आप ही बताइए सरकार बनाने के लिए बहुमत किसका होना चाहिए, कम वोटों से अधिक सदस्यों का या अधिक वोटों से कम सदस्यों का। सत्य बहुमत की राजनीति में सरकार बनाने का अधिकार उस नेता का होगा जिसके पास वोट अधिक हैं भले ही सदस्य कम। |
| सरकार बनाने का दावा करने वाले राजनीतिक दल अपने अपने नेता चुनाव से पहले तय करेंगे न कि चुनाव के पश्चात। | मतदाता किसी प्रकार की भ्रमित स्थिति में न आकर सभी अच्छे नेताओं में से सबसे अच्छे नेता को चुनकर गर्व का अनुभव करेंगे। |
| सरकार बनाने के लिए जिस प्रकार मतदाता की भूमिका चुनावों में होगी, उसी प्रकार सरकार बन जाने के पश्चात भी मतदाताओं की अहम भूमिका होगी। | सदन के कुछ सदस्य मान लो 40–30–20 प्रतिशत भी यदि सरकार के कार्य से संतुष्ट नहीं हैं–ऐसी स्थिति में चुनाव फिर से करवा दिए जाएंगे। |
| सभी सरकारी और बिलों के पास फेल का निर्णय चुने हुए सदस्यों द्वारा स्वतंत्र रूप से होंगे, न कि व्हिप से। व्हिप की राजनीति को समाप्त कर दिया जाएगा। | व्हिप की राजनीति का अंत होने के पश्चात हर निर्णय में सदस्यों के स्वतंत्र विचार होंगे, परिणामस्वरूप बिना पक्षपात के कम से कम समय में सही से सही निर्णय होंगे। |
| ~सत्य बहुमत~ की व्यवस्था में चुनाव होकर सरकार बनेगी तो अपराध और भ्रष्टाचार कैसे होगा! | भ्रष्टाचार की आवश्यकता ही नहीं है तो भ्रष्टाचार क्यों होगा –नहीं होगा–भ्रष्टाचार नहीं होगा तो अपराध भी नहीं होगा। भ्रष्टाचार और अपराध मुक्त व्यवस्था में विकास ही विकास होगा। |

# ~सत्य बहुमत~

# हमारा

# अधिकार

# है

Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

## 1. सत्य बहुमत और भ्रष्ट बहुमत की राजनीति क्या है?

आजादी के पश्चात हमारे राजनेताओं ने, प्रजातंत्र व निष्पक्ष चुनावों को आधार मानते हुए बहुमत की सरकार से शासन करना तय किया। पूरे देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए 543 सदस्यों का चुनाव वोटों के बहुमत से होना तय हुआ, और सरकार बनाने के लिए ये तय किया कि सरकार उस नेता के नेतृत्व में बनेगी जिसके पास जीते हुए 543 सदस्यों में से कम से कम 272 सदस्यों का समर्थन होगा। यानि सदस्य तो चुना जाएगा वोटों के बहुमत से और सरकार बनेगी सदस्यों के बहुमत से।

सत्य बहुमत की राजनीति के विचार में सरकार सदस्यों के बहुमत से न बनकर, वोटों के बहुमत से बननी चाहिए। जिस प्रकार एक और सभी सदस्यों का चुनाव वोटों के बहुमत से होता है उसी प्रकार सरकार भी उस राजनीतिक दल के नेता के नेतृत्व में बननी चाहिए जिसको अन्य दलों की तुलना में पूरे देश में वोट अधिक मिले हों भले ही सदस्य कम। बहुमत अधिक वोटो से होना चाहिए न कि गठबंधन, समझौते और जोड़ तोड़ की राजनीति करके अधिक सदस्यों से।

मैं समझता हूं कि सदस्यों के बहुमत से सरकार बनाना ही भ्रष्टाचार का एकमात्र कारण है। सदस्यों के बहुमत की राजनीति बिना भ्रष्टाचाार के संभव नहीं है, इसलिए भ्रष्टाचार का जन्म और आरम्भ सदस्यों के बहुमत की राजनीति से ही होता है। इसके विपरीत वोटों के बहुमत की राजनीति में भ्रष्टाचार की आवश्यकता ही नहीं है, या वोटों के बहुमत में भ्रष्टाचार हो ही नहीं सकता। मैं सदस्यों के बहुमत को भ्रष्ट बहुमत बोलकर अपना आक्रोश जताता हूं और वोटों के बहुमत को सत्य बहुमत कहकर गर्व का अनुभव करता हूं। भ्रष्टाचार से मुक्त होने के लिए सरकार सदस्यों के बहुमत से न बनकर वोटों के बहुमत से बने, इसी राजनीति को समझकर सत्य बहुमत को स्थापित करवाने की क्रांति ~सत्य बहुमत~ है।

## 2. क्या बहुमत को और स्पष्ट शब्दों में समझा जा सकता है?

सत्य बहुमत को बहुत ही सरलता से निम्न दो प्रकारों से समझा जा सकता हैः

**पहला :** मान लो पूरे देश में सभी 543 सदस्यों के चुनावों में दो राजनीतिक दल चुनाव के मैदान में हैं पहले दल के 300 सदस्य 45 लाख वोट प्राप्त करके विजयी होते हैं और दूसरे दल के 243 सदस्य 55 लाख वोट प्राप्त करके विजयी होते हैं, आप ही बताइये सरकार बनाने के लिए बहुमत किसका होना चाहिए, कम वोटों से अधिक सदस्यों का या अधिक वोटों से कम सदस्यों का।

**दूसरा :** एक राजनीतिक दल का पूरे देश में चुनाव लड़ने पर एक भी सदस्य विजयी नहीं हुआ परन्तु अन्य सभी राजनीतिक दलों की तुलना में वोट सबसे अधिक मिले इस स्थिति में बहुमत से सरकार बनाने का अधिकार किसका होना चाहिए? सभी सीटों पर हारने के पश्चात भी हारने वाले राजनीतिक दल के नेता को पूरे देश में अन्य सभी राजनीतिक दलों की तुलना में वोट सबसे अधिक मिलने पर क्या ये नहीं मानना चाहिए कि सभी सीटों पर हारने वाले नेता के कार्यक्रम से देश के मतदाता बहुमत से सहमत हैं।

मैं ये नहीं जानता कि सरकार सदस्यों के बहुमत से बनाना हमारे राजनेताओं ने क्यों तय किया, परन्तु मैं ये अवश्य जानता हूं कि भ्रष्टाचार का कारण केवल सदस्यों के बहुमत से सरकार बनाना ही है। सरकार भी वोटों के बहुमत से बनाकर हमारी राजनीति 100 प्रतिशत भ्रष्टाचार मुक्त हो सकती है, परिणामस्वरूप आज सदस्यों के चुनावों में और सरकार बनाने में जो भ्रष्टाचार होता है वह नहीं होगा। भ्रष्टाचार समाप्त होने के पश्चात गरीबों की गरीबी दूर होने के साथ साथ देश विकास के मार्ग पर चल पड़ेगा।

## 3. जब सदस्यों के बहुमत से सरकार बनाने की राजनीति भ्रष्ट राजनीति है, तब हमारे राजनेताओं ने सदस्यों के बहुमत को छोड़कर वोटों के बहुमत की भ्रष्टाचार मुक्त राजनीति को क्यों नहीं अपनाया?

ऐसे जटिल प्रश्नों का उत्तर देने की क्षमता मुझ में नहीं है, फिर भी मेरे विचार से आजादी के समय कुछ राजनेताओं के उपर अंग्रेजों की मानसिकता का गहरा प्रभाव और कुछ भ्रष्ट राजनेताओं को सत्ता का सुख भोगने की ललक ने देश की राजनीति में सदस्यों के भ्रष्ट बहुमत का निर्णय थोप दिया। मतदाताओं के बीच सदस्यों के बहुमत की कभी भी

चर्चा नहीं हुई और न ही मतदाताओं की राय से सदस्यों के बहुमत से सरकार बनाने का निर्णय लिया गया। आज भी भ्रष्टाचार से मुक्त होने के लिए केवल नकारात्मक चर्चाओं को करके हमारे राजनेता और आन्दोलनकारी मतदाताओं को भ्रमित करके देश का समय बर्बाद करते रहते हैं, लेकिन सत्य बहुमत की राजनीति की चर्चा करके भ्रष्टाचार से मुक्त होने के प्रयास नहीं करते।

मेरे विचार में इस समय चाहे उचित, परन्तु अनावश्यक प्रश्नों की चर्चा में समय बर्बाद न करके, हमारी सबसे पहली प्राथमिकता केवल सत्य बहुमत को स्थापित करवाने की होनी चाहिए और उसके पश्चात भी समय को गरीबों की गरीबी दूर करने में लगाना चाहिए। मैं समझता हूं कि सदस्यों के बहुमत की भ्रष्ट व्यवस्था में सबसे अधिक हानि हमारे समय की ही हुई है, गरीबी समाप्त करने के जो कार्य हमें पिछले 65 वर्षों में कर देने थे, वो काम हमने आज तक भी नहीं किए। अब जो समय गया सो गया, लेकिन भविष्य में और समय बर्बाद न करके सत्य बहुमत की राजनीति को स्थापित करवाने के सफल प्रयास करने चाहिएं।

## 4. सदस्यों के बहुमत से सरकार बनाने की वर्तमान व्यवस्था में हमें वोट किसको करना चाहिए?

वर्तमान राजनीति में मेरे विचार से तीन प्रकार के मतदाता हैंः

पहले जो मतदान करते ही नहीं।
दूसरे जिनके मतदान से विपक्ष बनता है।
और तीसरे जिनके मतदान से सत्तापक्ष बनता है।

जिनके मतदान से सदस्यों के बहुमत का सत्तापक्ष बना और सत्तापक्ष वालों ने ही जमकर भ्रष्टाचार किया, इसलिए ऐसे मतदाता भ्रष्टाचार करने वालों को और अधिक प्रोत्साहित करके स्वयं भ्रष्टाचार के समर्थक बनते हैं। जिनके मतदान से सदस्यों के बहुमत का सत्तापक्ष बना ऐसे मतदाता तो सबसे घटिया मतदाता हैं। इनसे तो अच्छे मतदाता वो हैं जिनके मतदान से विपक्ष बना।

जिनके मतदान से विपक्ष बनता है और विपक्ष वाले भी भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में किसी प्रकार के भी सकारात्मक प्रयास नहीं करते, केवल सत्तापक्ष की आलोचना कर कर के इसी जुगाड़ में लगे रहते हैं कि किसी प्रकार सदस्यों के भ्रष्ट बहुमत से सत्ता में आकर भ्रष्टाचार करने का मौका हमें भी मिले। जिनके मतदान से विपक्ष बनता है, ऐसे मतदाता भी घटिया मतदाता हैं लेकिन जिनके मतदान से सत्तापक्ष बनता है उनसे कुछ कम। चाहे जाने में या अनजाने में है तो सच्चाई कि सदस्यों के बहुमत की भ्रष्ट व्यवस्था को मतदान करने से ही सत्तापक्ष ने भ्रष्टाचार किया और उसी व्यवस्था के विपक्षियों ने करने दिया। सदस्यों के बहुमत की व्यवस्था को मतदान करने से चाहे सत्तापक्ष बने या विपक्ष किसी भी परिस्थिति में भ्रष्टाचार से छुटकारा नहीं मिलता, फिर मतदान करके भ्रष्टाचार करने वालों का या भ्रष्टाचार को रोक नहीं पाने वालों का समर्थक किसलिए बना जाए। इससे तो अच्छा है मतदान करें ही ना।

मतदान नहीं करने वालों के बारे में ऐसे भ्रमित प्रचार किए जाते हैं मानो मतदान नहीं करने वाले सबसे बड़े देशद्रोही हों, जबकि सच्चाई इसके बिल्कुल उलट है। सदस्यों के बहुमत की व्यवस्था में मतदाता चाहे मतदान करें या न करें, चाहे मतदान कम करें या अधिक, मतदान करने से चाहे सत्तापक्ष बने या विपक्ष किसी भी स्थिति में व्यवस्था भ्रष्टाचार मुक्त नहीं बनती। इससे ये एकदम स्पष्ट और प्रमाणित हो जाता है कि भ्रष्टाचार का कारण व्यक्तिगत रूप से न तो चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार हैं न ही मतदान करने वाले या नहीं करने वाले मतदाता, अपितु केवल सदस्यों के बहुमत से सरकार बनाना ही भ्रष्टाचार का एकमात्र कारण है।

लेकिन मतदान नहीं करने से भी बात नहीं बनती क्योंकि प्रजातंत्र में बिना मतदान के व्यवस्था बनेगी कैसे। इस परिस्थिति में सभी प्रकार के मतदाता संगठित होकर विचार करें कि सरकार सदस्यों के बहुमत के बदले यदि वोटों के बहुमत से बने तो भ्रष्टाचार कैसे हो सकता है? मतदान नहीं करने वालों से मैं 100 प्रतिशत से भी अधिक सहमत हूं, और मैं समझता हूं कि सदस्यों के बहुमत से सरकार बनाने की व्यवस्था को मतदान नहीं करने वाले सबसे श्रेष्ठ व बुद्धिमान मतदाता हैं, क्योंकि मतदान नहीं करने वाले भ्रष्ट बहुमत की व्यवस्था को नकारते हुए सत्य बहुमत की प्रतीक्षा में हैं, जैसे ही अवसर मिलेगा सत्य बहुमत की भ्रष्टाचार मुक्त राजनीति को समर्थन दे देंगे। मैंने आज तक हर चुनाव

में मतदान किया लेकिन अब जब सदस्यों के बहुमत की भ्रष्ट व्यवस्था का ज्ञान हुआ तब मैंने निर्णय लिया कि भ्रष्ट बहुमत की व्यवस्था को मतदान नहीं करूंगा। मैं मतदान करूंगा तो सत्य बहुमत की व्यवस्था से सहमत होने वाले उम्मीदवार को करूंगा या मतदान करूंगा ही नहीं।

## 5. क्या अधिक जनसंख्या और अशिक्षा किसी प्रकार से भी भ्रष्टाचार का कारण हैं?

जनसंख्या अधिक होने के कारण और देश की अधिकतम जनसंख्या अशिक्षित है इस कारण से भ्रष्टाचार होता है, ये विचार बिल्कुल निराधार, झूठा और भ्रमित है। अधिक जनसंख्या और वो भी विश्व के अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक युवा जनसंख्या हमारे देश का अनमोल धन है। जनसंख्या की शक्ति को हम बिना बिजली बिना मशीन के, अपने देश को, समाज को और विश्व को सुखी और समृद्ध बनाने में अद्‌भुत प्रयोग कर सकते हैं।

रही बात राजनीति में शिक्षित या अशिक्षित होने की तो मैं ये समझता हूं कि, शिक्षा का सम्बन्ध भ्रष्ट राजनीति से तो हो सकता है, लेकिन सच्ची और अच्छी राजनीति केवल शिक्षा से हो सकती है ये विचार पूर्णतया झूठा है, शिक्षा सच्ची और अच्छी राजनीति में सहायक हो सकती है, आधार नहीं। हमारी सरकारी व्यवस्था को बनाने के लिए और चलाने के लिए सभी वरिष्ठ राजनेताओं और अधिकारियों ने उच्च से उच्च शिक्षा ले रखी है, फिर भी व्यवस्था भ्रष्टाचार से लथपथ क्यों है? अंग्रेजों से आजादी के एग्रीमेंट करने वाले जिम्मेवार नेताओं ने तो अच्छी से अच्छी शिक्षा वो भी विदेशों में ले रखी थी, मैंने सुना है कि पहले से ही निश्चित राजनेताओं को कालेज में जाने के लिए विशेष कारों का प्रबंध हुआ करता था और पता नहीं कालेज के कौन से द्वार से भविष्य के राजनेता निकल आएं, तो हर द्वार पर विशेष कारों का प्रबन्ध उनको लेने के लिए हुआ करता था, इससे अच्छी और उच्च शिक्षा इस धरती पर और कैसे मिल सकती है, फिर भी इन पढ़े लिखे राजनेताओं ने और राजनेताओं से मिलकर पढ़े लिखे अधिकारियों ने अपनी शिक्षा का प्रयोग केवल भ्रष्टाचार का आनन्द लूटने के लिए किया न कि देश के गरीबों की गरीबी दूर करने के लिए।

भ्रष्टाचार और गरीबी दूर करने के लिए केवल शिक्षा नहीं सच्चा राजनीतिक विचार होना चाहिए। अधिक जनसंख्या और अधिकतर अशिक्षित किसी भी प्रकार से भ्रष्टाचार का कारण नहीं हैं, भ्रष्टाचार का कारण केवल सदस्यों के बहुमत की भ्रष्ट राजनीति ही है। मान भी लिया जाए कि कुछ समस्याएं जनसंख्या अधिक होने के कारण और अधिकतर जनसंख्या के अशिक्षित होने के कारण हैं भी, तो इन समस्याओं का कारण भ्रष्ट राजनीति की सरकार को छोड़कर दूसरा कौन है?

## 6. क्या 18 बर्ष की आयु वाले को मताधिकार देना उचित है?

18 वर्ष की आयु वाले को मतदाता क्यों बना दिया इस विषय पर अच्छी चर्चा और बहस हो सकती है। सरकार सदस्यों के बहुमत से बनेगी इस राजनीति की जानकारी दिए बिना 18 वर्ष के नौजवानों को मतदाता बनाकर, चालाक राजनेताओं ने देश के बहुमत को और अधिक भ्रमित बना दिया। 18 वर्ष के नौजवानों को मताधिकारी बनाने से पहले, उनके स्कूल और कालेजों में बहुमत की राजनीति की शिक्षा देनी चाहिए थी, इन नौजवानों को स्पष्ट रूप से ये बताकर कि सरकार सदस्यों के बहुमत से बनेगी, इसके पक्ष और विपक्ष में अच्छे से बहस करवानी चाहिए थी। 18 वर्ष के नौजवानों को नहीं मालुम कि हम किस राजनीति को समर्थन देकर, किस आधार पर मतदान करके, कैसे देश के विकास की धारा में जुड़ रहे हैं।

बिना बहुमत की जानकारी के इन नौजवानों के मतदान से सरकार बनवाना मेरे विचार में सरासर अनुचित है। विचित्र बात ये भी है कि 18 वर्ष वाले वोट दे सकते हैं परन्तु चुनाव नहीं लड़ सकते। प्रजातंत्र का मजाक उड़ाने के साथ साथ 18 वर्ष की आयु वालों से मतदान करवाकर उनको जीवन के आरम्भ से ही भ्रष्ट बहुमत की राजनीति का समर्थक बना दिया।

18 वर्ष की आयु वालों को मताधिकारी बनाने का मुझे केवल एक ही कारण लगता है कि, भ्रष्ट बहुमत की राजनीति का जिनको जरा सा भी ज्ञान है वे मतदाता वोट डालते ही नहीं, परिणामस्वरूप मतदाताओं की घटती संख्या को बढ़ाने के लिए 18 वर्ष की आयु वालों को मताधिकारी बना दिया। यदि 18 वर्ष की आयु वाले मतदान कर सकते हैं तो 18 वर्ष की आयु वाले चुनाव क्यों नहीं लड़ सकते? मेरे

विचार में मताधिकार की आयु और चुनाव लड़ने के अधिकार की आयु एक समान होनी चाहिए।

## 7. क्या अपराधियों को चुनाव लड़ने की अनुमति होनी चाहिए?

पहले तो हमें ये समझना होगा कि अपराध होने के क्या कारण हैं, अपराध होते ही क्यों हैं? क्या अपराधी का दिमाग इतना खराब है कि अचानक उठा अपराध किया और दंड भुगतने के लिए तैयार हो गया। अपराध और भ्रष्टाचार मिलती जुलती बातें ही हैं। मेरे विचार में अधिकतर अपराधों का कारण केवल भ्रष्ट बहुमत की राजनीति ही है, जिसमें अपराधियों और भ्रष्टाचारियों के समर्थन के बिना सदस्यों का बहुमत नहीं जुटाया जा सकता। राजनीति को भ्रष्टाचार मुक्त बनाकर ही अपराध और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया जा सकता है।

जहां तक अपराधियों के चुनाव लड़ने की बात है तो मेरे विचार में अपराध और राजनीति को अलग अलग विषय मानकर अपराधी को चुनाव लड़ने का अधिकार मिलना चाहिए। यदि अपराधी अपनी गलती का प्रायश्चित करके चुनावों के माध्यम से अपने आप को परिवर्तित करने का प्रयास करे तो इसमें क्या हानि है? राजनीति विचारों का विषय है, हो सकता है किसी भी अपराधी के विचारों में मानव कल्याण के अच्छे विचार मिल जाएं, और वो तभी सम्भव है जब उस अपराधी को अपने विचार रखने का अवसर मिलेगा। अपराधी को स्वीकार करना या नहीं करने का निर्णय मतदाता भी तो कर सकते हैं। अपराध की सजा काटते काटते यदि अपराधी मानव कल्याण की बात करना चाहे तो मेरे विचार में अपराधी को अवसर अवश्य मिलना चाहिए।

मेरे विचार का ये अर्थ नहीं है कि अपराधी को अपराध की सजा नहीं मिलनी चाहिए और अपराधी चुनाव में जीतकर अपराध से मुक्त हो जाएगा। राजनीति को भ्रष्टाचार से मुक्त करके सच्चे ईमानदार देशवासियों के लिए व्यवस्था लोकप्रिय होनी चाहिए और अपराधियों के लिए इतनी कठोर कि अपराध करना तो दूर अपराध करने की सोचने मात्र से ही कांप जाए। अपराधी को चुनाव लड़ने का अधिकार देने के पक्ष में मैं इसलिए हूं कि हम प्रजातंत्र को मजबूत बनाना चाहते हैं और दूसरा इसलिए भी कि अपराधी के विचारों से अच्छे विचार मिलने की संभावना के अवसर को हम गंवाना नहीं चाहते। घृणित से घृणित अपराधी ने भी अवसर

मिलने पर मानव कल्याण के अद्वितीय कार्य किए हैं, ऐसे एक नहीं कई उदाहरण मिल जाएंगे। हमारा प्रजातंत्र इतना मजबूत होना चाहिए कि अपराधी भी प्रजातंत्र में विश्वास करे, हमारा प्रजातंत्र अपराधी को सजा देते हुए ऐसी व्यवस्था बनाए कि भविष्य में अपराध न हो।

## 8. क्या हमारे देश की राजनीति भ्रष्टाचार मुक्त हो सकती है?

सरकार बनाने के लिए सदस्यों के बहुमत की भ्रष्ट राजनीति को नकार कर वोटों के बहुमत की राजनीति को स्थापित करके 100 प्रतिशत भ्रष्टाचार मुक्त राजनीति का निर्माण संभव है। ये काम भ्रष्ट राजनेता नहीं करेंगे क्योंकि भ्रष्ट बहुमत की राजनीति को इन्हीं भ्रष्ट राजनेताओं ने समझते हुए भी देश के उपर थोपकर मतदाताओं को मूर्ख बना रखा है। सत्य बहुमत की राजनीति को स्थापित केवल देश के मतदाता ही कर सकते हैं। हम सब सत्य बहुमत की राजनीति को स्थापित करवाने में सक्रिय सहयोग, सुझाव व समर्थन देकर केवल देशभक्त नहीं सच्चे देशभक्त बनें।

## 9. हर हरिजन –सत्य बहुमत– से आप क्या संदेश देना चाहते हैं?

मैं स्वयं अपने आप को हरिजन मानकर ये मानता हूं कि संसार के सभी प्राणी भगवान की देन हैं और इन सब को सत्य बहुमत में विश्वास है।

## 10. हमारे आन्दोलनकारियों की भ्रष्टाचार पर काबू पाने की क्या भूमिका रही?

भ्रष्टाचार के विरोध में आवाज उठाने के साहस करने पर मैं सभी आन्दोलनकारियों का हृदय से आदर करते हुए अभिनन्दन करता हूं। परन्तु व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर किसी भी आन्दोलनकारी से मैं अभी तक ये नहीं जान पाया कि हमारे आन्दोलनकारी कौन सी व्यवस्था को किस प्रकार बदलकर भ्रष्टाचार से मुक्त होना चाहते हैं। आन्दोलनकारियों ने न तो ये बताया कि भ्रष्ट व्यवस्था क्या है, और न ही ये बता पाए कि भ्रष्ट व्यवस्था को कैसे भ्रष्टाचार मुक्त बनाया जा सकता है।

सभी आन्दोलनकारियों ने सदस्यों के बहुमत की भ्रष्ट व्यवस्था को अपने वोटों द्वारा जी भर के समर्थन किया हुआ है और आज भी समर्थन देने के लिए तैयार हैं। हमारे

आन्दोलनकारी अनशनों और आन्दोलनों के माध्यम से भ्रष्टाचार का विरोध करने के लिए अपनी जान की भी परवाह नहीं करते, इसके पश्चात भी निष्कर्ष कुछ नहीं निकलता और समस्या वहीं की वहीं। आन्दोलनकारी राजनीति करते नहीं, चुनाव लड़ते नहीं, फिर भी न जाने कौन से आसन से कौन सी हवा से और कौन सी टोपी पहन कर व्यवस्था को भ्रष्टाचार मुक्त करना चाहते हैं।

हमारे आन्दोलनकारी ये नहीं समझ पा रहे हैं कि भ्रष्टाचार का कारण कोई व्यक्ति विशेष नहीं बल्कि भ्रष्ट बहुमत से सरकार बनाने की राजनीति है, और इसके बदले यदि सत्य बहुमत से सरकार बनाने की राजनीति को स्थापित करवा दिया जाए तो राजनीति भ्रष्टाचार मुक्त बन जाएगी। यदि आन्दोलनकारी सत्य बहुमत के विचार पर गम्भीरता से चिंतन करके सत्य बहुमत को सफल बनाने में लग जाते तो अब तक कभी का भ्रष्ट राजनीति में हड़कम्प मच गया होता और राजनीति भ्रष्टाचार मुक्त होने के किनारे पर होती। आन्दोलनकारियों का राजनीति में रूचि नहीं लेने के कारण ही भ्रष्ट राजनेता सभी आन्दोलनकारियों के भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलनों को कुचलने में सफल हो जाते हैं और भ्रष्टाचार की समस्या पहले से भी कहीं अधिक बढ़ जाती है।

चाहे अनजाने में ही, है तो सच्चाई कि आन्दोलनकारी भी भ्रष्ट बहुमत की व्यवस्था को वोट देकर स्वयं भ्रष्ट व्यवस्था के समर्थक बने हुए हैं। मेरा आन्दोलनकारियों को परामर्श है कि, राजनीति को भ्रष्टाचार मुक्त करने के लिए सत्य बहुमत के विचार से सहमत होकर मतदाताओं को जागरूक करने का कार्य आरम्भ करके अपनी आंखों से देख लें कैसे भ्रष्ट राजनीति के पैर उखड़ते हैं। भ्रष्टाचार एक राजनीतिक समस्या है और राजनीति की समस्या का समाधान केवल व्यक्ति नहीं हो सकता, इसलिए आन्दोलन करने वालों को सच्चे राजनीतिक विचार के आधार पर राजनीति करके समस्या का अमर समाधान करना चाहिए।

## 11. हिन्दु मुसलमानों को आज की राजनीति के संदर्भ में कैसे देखा जाना चाहिए?

भारत के हिन्दु और मुसलमानों ने एक होकर केवल भारतीय बनकर अंग्रेजों से देश को आजाद करने की लड़ाई लड़ी थी। मैंने सुना है अंग्रेजो ने भारत छोड़ने से कुछ समय

पहले हिन्दु और मुसलमानों में घृणा पैदा करवाके आपस में लड़वाने का प्रयोग किया, और हमारे ही कुछ लोगों ने अंग्रेजों की सहायता करके घृणा के प्रयोग को सफल बना दिया। घृणा की राजनीति पर हिन्दु मुसलमानों को लड़वाकर कुछ नेताओं ने सत्ता के स्वार्थ में देश के टुकड़े करवाना भी स्वीकार कर लिया।

मैं बीते समय की बातें करके विषय को लम्बा नहीं करना चाहता और न ही बीते समय की बातें करने की मुझमें शक्ति है, न बुद्धि। आज की स्थिति में हम राजनीति को छोड़कर किसी भी धर्म में विश्वास रखने वाले से बात करें तो सभी के सभी प्यार, प्रेम, सहयोग और सदभावना से आपस में मिलकर ही रहना चाहते हैं, लेकिन जैसे ही राजनीति की बात करो अलग अलग धर्म के बने नेता अलग अलग सुर अलापना आरम्भ कर देते हैं। हिन्दु मुसलमानों को आपस में लड़वाकर और घृणा पैदा करवाके दोनों धर्मों के नेता भ्रष्ट बहुमत की राजनीति का भरपूर लाभ उठाने का प्रयास करते हैं। इन धर्मों के बने नेताओं को मैं दोष नहीं देना चाहता क्योंकि किसी भी धर्म के नेता भी हैं तो इन्सान ही, भूख तो नेताओं को भी लगती है।

भ्रष्ट राजनीति के कारण गरीबों को आपस में लड़वाकर नेताओं को राजनीति में अपना स्थान बनाने का अच्छा मौका मिल जाता है। सदस्यों के बहुमत से सरकार बनाने की राजनीति को यदि वोटों के बहुमत से नहीं बदला तो धर्मों की लड़ाई कम होने की बजाय बढ़ती ही जाएगी, वर्तमान राजनीति में इस समस्या को समाप्त करने की बात तो छोड़ो कम भी नहीं किया जा सकता। वर्तमान भ्रष्ट बहुमत की राजनीति ही धर्मों के नाम पर आपस में लड़वाने का कारण है, इसलिए लड़ाई समाप्त करने के लिए भ्रष्ट बहुमत की राजनीति को ही बदलना होगा।

आज कुछ राजनीतिक दल केवल मुसलमानों के वोटों पर कब्जा करके सत्तापक्ष बनने मे सफल हो जाते है, इस स्थिति में दूसरा राजनीतिक दल हिन्दुओं के वोटों पर कब्जा करके सत्ता में आने के प्रयास करता है। वर्तमान भ्रष्ट बहुमत की राजनीति में हिन्दु और मुसलमानों के नेता दोनों ही अपने आप को सही बताते हैं फिर भी न गरीब हिन्दु को न्याय मिलता और न ही गरीब मुसलमान को, और इस स्थिति में सच्चाई ये है कि किसी भी धर्म के गरीब मतदाता आपस की लड़ाई में मरते रहते हैं और राजनेता गरीबों को

लड़वाकर सत्ता की ताकत पर देश को लूटते रहते हैं। किसी भी धर्म के नेता अलग अलग या आपस में मिलकर ये चिंतन नहीं करते कि हिन्दु मुसलमान में धृणा किसने करवाई, क्यों करवाई, और अब इस घृणा को कैसे समाप्त किया जाए। आज की राजनीति में कभी धर्म के नाम पर, कभी जाति के नाम पर, कभी भाषा के नाम पर और कभी वर्ग के नाम पर राजनीति होती है, ऐसी स्थिति में आने वाले भविष्य में भारत क्या होगा केवल कल्पना करने से ही मैं तो कांप जाता हूं।

जो समय गया सो गया, तुरंत सत्य बहुमत की राजनीति को स्वीकार करके ऐसी राजनीति बनाओ कि हिन्दु मुसलमानों के वोटों के बिना राजनीति न कर सके, और न ही मुसलमान हिन्दुओं के वोटों के बिना राजनीति कर पाएं, और ये राजनीति –सत्य बहुमत– की राजनीति को छोड़कर और कैसे हो सकती है विचार करके देख लो। यदि सत्य बहुमत का कोई विकल्प है ही नहीं तो किस बात की देर है हिन्दु मुसलमान और अन्य धर्मों में विश्वास रखने वाले सभी उठो और भ्रष्ट बहुमत की राजनीति को ठुकरा कर सत्य बहुमत की राजनीति को स्वीकार करके बढ़ो विकास के मार्ग पर।

✲

बहनो भाईयो, केवल प्रश्नों में समय बर्बाद न करके अपने सभी प्रश्नों के उत्तर सत्य बहुमत के माध्यम से निकाल लो। शांति से चिंतन करके देख लो कि सभी समस्याओं का कारण केवल भ्रष्ट बहुमत की राजनीति से सरकार बनाना है कि नहीं और इन सभी समस्याओं का समाधान भी केवल सत्य बहुमत है कि नहीं। सत्य बहुमत से सहमत होकर देखना कैसे भ्रष्ट राजनीति में जमे हुए भ्रष्ट राजनेताओं के पैर उखड़ते हैं, और सत्य बहुमत को स्थापित करवाके अपनी आंखों से देख लेना कैसा और कितना सुंदर, समृद्ध और सुदृढ़ था हमारे भारत का अतीत।

✲

# ~ सत्य बहुमत ~

*'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'*

## के समर्थन में निम्न स्थानों पर प्रदर्शन किए गए:

| क्र. | दिनांक | दिन | समय | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 27.10.2012 | शनिवार | सुबह 10:00 बजे से<br>सायं 5:00 बजे तक प्रदर्शन | जन्तर मन्तर,<br>नई दिल्ली–110001 |
| 2. | 13.01.2013 | रविवार | सुबह 10:00 बजे से<br>दोपहर 2:00 बजे तक प्रदर्शन | जन्तर मन्तर,<br>नई दिल्ली–110001 |
| 3. | 17.02.2013 | रविवार | सुबह 10:00 बजे से<br>दोपहर 1:00 बजे तक प्रदर्शन | शक्ति नगर,<br>दिल्ली–110007 |
| 4. | 24.02.2013 | रविवार | सुबह 10:00 बजे से<br>दोपहर 1:00 बजे तक प्रदर्शन | आदर्श नगर, मैट्रो स्टेशन,<br>दिल्ली–110033 |
| 5. | 10.03.2013 | रविवार | सुबह 10:00 बजे से<br>दोपहर 1:00 बजे तक प्रदर्शन | मधुबन चौक, पीतमपुरा,<br>दिल्ली–110088 |
| 6. | 24.03.2013 | रविवार | सुबह 10:00 बजे से<br>दोपहर 1:00 बजे तक प्रदर्शन | बंगलो रोड, रूपनगर,<br>दिल्ली–110007 |
| 7. | 19.05.2013 | रविवार | सायं 4:00 बजे से<br>सायं 7:00 बजे तक प्रदर्शन | मुखर्जी नगर,<br>दिल्ली–110009 |
| 8. | 26.05.2013 | रविवार | सायं 5:00 बजे से<br>सायं 8:00 बजे तक प्रदर्शन | अशोक विहार,<br>दिल्ली–110052 |
| 9. | 23.06.2013 | रविवार | सायं 5:00 बजे से<br>सायं 8:00 बजे तक प्रदर्शन | मुनिरका,<br>नई दिल्ली–110016 |
| 10. | 30.06.2013 | रविवार | सायं 5:00 बजे से<br>सायं 8:00 बजे तक प्रदर्शन | कटवारिया सराय,<br>नई दिल्ली–110016 |

# ~ सत्य बहुमत ~

*'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'*

## के समर्थन में निम्न स्थानों पर प्रदर्शन किए गए:

| क्र. | दिनांक | दिन | समय | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| 11. | 07.07.2013 | रविवार | सायं 5:00 बजे से<br>सायं 8:00 बजे तक प्रदर्शन | बेर सराय,<br>नई दिल्ली–110016 |
| 12. | 18.08.2013 | रविवार | सायं 5:00 बजे से<br>सायं 8:00 बजे तक प्रदर्शन | घंटाघर, (सब्जी मंडी),<br>दिल्ली–110007 |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

# ~सत्य बहुमत~

# से हम

# 100 प्रतिशत

# सहमत

# हैं

Web : www.satyabahumat.com
Email : satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/satyabahumat

# ~सत्य बहुमत~

*'भ्रष्टाचार मुक्त राजनीतिक विकल्प'*

Web: www.satyabahumat.com
E-mail: satyabahumat@gmail.com
http://www.facebook.com/pages/Satya-Bahumat/107380859419019
सम्पकं : +91-9810043429

***~सत्य बहुमत~*** के समर्थन में और सत्य बहुमत को समझने व समझाने के लिए दिनांकः रविवार 07.07.2013 समय सायं 5:00 बजे से सायं 8:00 बजे तक बेर सराय, नई दिल्ली–110016 पर प्रदर्शन करने के कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

सत्य बहुमत का विचार समझ लेने के पश्चात यदि आप सत्य बहुमत से सहमत हैं तो सत्य बहुमत को स्थापित करवाने के लिए अपना सकारात्मक सहयोग, सुझाव व समर्थन देने में देर न करके केवल देश भक्त नहीं सच्चे देश भक्त बनो। सत्य बहुमत को स्थापित करवाने की क्रांति में बेर सराय पर प्रदर्शन उसी कड़ी का प्रयास है। थोड़ा सा समय निकालकर सत्य बहुमत की भ्रष्टाचार मुक्त राजनीति को समर्थन देने के लिए अधिक से अधिक संख्या में पधारें। औरों की प्रतीक्षा न करते हुए आप स्वयं चल पड़ना, देख लेना भ्रष्ट राजनीति में कैसे हड़कम्प मचता है।

आप सभी से अनुरोध है कि सत्य बहुमत से जुड़ने के लिए अधिक से अधिक संख्या में फेसबुक के माध्यम से ~सत्य बहुमत ~ को Like करें, शेयर करें व कमेंट करें।

धन्यवाद

*प्रदर्शन करने से पहले बांटे जाने वाले हैंडबिल का नमूना।*

## कुछ लिखने के लिए

## कुछ लिखने के लिए

## कुछ लिखने के लिए

*हर हरिजन*

*~सत्य बहुमत~*